विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत. **दिनांक 24 मई 2020**

वर्ग सप्तम **राजेश कुमार पाण्डेय**

प्रथम: पाठ: सत्यस्य महत्वम्

संस्कृत से हिंदी अनुवाद सहित।

अष्टमे दिने पितामहः भीष्म: तत्र समागतः दिन भीष्म पितामह वहां आठवीं आए।

सः तेषां विषये आचार्यम् अपृच्छत्।

उन्होंने उसके विषय में आचार्य से पूछा। द्रोणाचार्येण उक्तम्- अयं बालः युधिष्ठिरः अतीव मन्दबुद्धिः अस्ति।

द्रोणाचार्य बोले-यह बालक युधिष्ठिर बहुत मंदबुद्धि वाला है।

न जाने एषः राज्यं कथं परिपालिष्यति? न जाने यह राज्य का कैसे चला पाएगा ? भीष्मः युधिष्ठिरं अकथयत् - श्रृणोष! आचार्यः किं वदति ?

भीष्म युधिष्ठिर से बोले-सुन रहे हो! आचार्य क्या बोलते हैं।

त्वं किमर्थं न पठसि?

तुम क्यों नहीं पढ़ते हो।

पश्य त्वं भ्रातरः अष्ट पाठान् पठितवन्तः। देखो तुम्हारा भाई 8 पाठ याद कर लिया है।

परं त्वं प्रथम पाठे एव स्थितोऽसि।

लेकिन तुम प्रथम पाठ में ही स्थित हो।

किं कारणमस्ति? क्या कारण है

एतत् श्रुत्वा युधिष्ठिरः अकथयत्-पितामह ! यह सुनकर युधिष्ठिर बोले- पितामह ।पाठस्य उत्तरार्ध 'क्रोधं मा कुरु' इति तु मया सम्यक् स्मृतम्।।

पाठ के अंतिम मैं पढ़ाया गया है 'क्रोध मत करो' 'यह तो मेरे द्वारा ठीक ही याद किया गया है।